एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 05 (मई, 2026)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

नवजात एवं छोटे बछड़ों की देखभाल एवं प्रबंधन

*रवि कुमार मीना, राधे श्याम मीना एवं राहुल मीना
डॉ. भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: ravimeenj1996@gmail.com

नवजात बछड़ों की उचित देखभाल एवं वैज्ञानिक प्रबंधन डेयरी पशुपालन की सफलता का आधार है, क्योंकि आज का स्वस्थ बछड़ा ही भविष्य का उच्च उत्पादक गाय या भैंस बनता है। जन्म के प्रारंभिक दिनों में सही पोषण, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य प्रबंधन अपनाने से पशु की वृद्धि, रोग प्रतिरोधक क्षमता तथा भविष्य की उत्पादन क्षमता में उल्लेखनीय सुधार होता है। सामान्यतः पशुपालक दुधारू पशुओं पर अधिक ध्यान देते हैं, जबकि नवजात एवं छोटे बछड़ों के प्रबंधन को अपेक्षित महत्व नहीं दिया जाता। शोधों से यह स्पष्ट हुआ है कि अपर्याप्त देखभाल एवं कुप्रबंधन के कारण लगभग 15–20 प्रतिशत बछड़े जन्म से एक माह की आयु के भीतर मृत्यु का शिकार हो जाते हैं। अतः प्रत्येक पशुपालक को यह समझना चाहिए कि पशुधन का भविष्य नवजात पशुओं की वैज्ञानिक देखभाल पर निर्भर करता है।

जन्म के तुरंत बाद की देखभाल एवं स्वच्छता प्रबंधन

जन्म के तुरंत बाद बछड़े के नाक एवं मुंह से कफ अथवा श्लेष्मा को अच्छी तरह साफ करना चाहिए, ताकि श्वसन क्रिया सामान्य रूप से प्रारंभ हो सके। सामान्यतः गाय बछड़े को जीभ से चाटकर उसके शरीर को सुखाती है, जिससे रक्त संचार एवं श्वसन क्रिया सक्रिय होती है। यदि पशु ऐसा न करे अथवा मौसम अत्यधिक ठंडा हो, तो सूखे कपड़े या टाट की सहायता से शरीर को अच्छी तरह पोंछकर सुखाना चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर छाती को हल्के दबाव से दबाकर एवं छोड़कर कृत्रिम श्वसन भी दिया जा सकता है। नाभिनाल को शरीर से लगभग 2–5 सेंटीमीटर दूरी पर बांधकर, गांठ के नीचे से काटना चाहिए तथा संक्रमण रोकने हेतु टिंक्चर आयोडीन, बोरिक एसिड अथवा उपयुक्त एंटीसेप्टिक लगाना आवश्यक है। बछड़े के रहने का स्थान पूर्णतः स्वच्छ, सूखा एवं आरामदायक होना चाहिए। गीले बिछावन को तुरंत हटाकर सूखा बिछावन उपलब्ध कराना चाहिए। जन्म के समय बछड़े का वजन अवश्य दर्ज करना चाहिए, जिससे उसकी वृद्धि दर का नियमित मूल्यांकन किया जा सके। दूध पिलाने से पूर्व गाय के थन एवं स्तनाग्रों को क्लोरीन घोल से साफ कर सुखाना चाहिए। जन्म के तुरंत बाद बछड़े को मां का पहला दूध अर्थात् खीस अवश्य पिलाना चाहिए। सामान्यतः बछड़ा जन्म के एक घंटे के भीतर खड़ा होकर दूध पीने का प्रयास करता है; यदि वह कमजोर हो तो उसे सहारा देकर दूध पिलाना चाहिए।

खीस, दूध एवं प्रारंभिक पोषण प्रबंधन

नवजात बछड़े के लिए सबसे महत्वपूर्ण एवं आवश्यक आहार मां का पहला दूध अर्थात् खीस है। खीस का निर्माण प्रसव के पश्चात लगभग 3–7 दिनों तक होता है। यह उच्च गुणवत्ता वाले पोषक तत्वों, ऊर्जा, विटामिन तथा एंटीबॉडी का प्रमुख स्रोत होता है, जो नवजात बछड़े को संक्रामक रोगों से सुरक्षा प्रदान करते हैं। जन्म के बाद प्रारंभिक तीन दिनों तक बछड़े को पर्याप्त मात्रा में (शरीर भार का 10%) खीस अवश्य पिलानी चाहिए। खीस के अतिरिक्त बछड़े को लगभग 3–4 सप्ताह तक मां के दूध की आवश्यकता होती है। इसके बाद उसका पाचन तंत्र धीरे-धीरे वनस्पति स्रोतों से प्राप्त कार्बोहाइड्रेट एवं अन्य पोषक तत्वों को पचाने में सक्षम हो जाता है। दूध का तापमान शरीर के तापमान के समान होना चाहिए, जिससे पाचन संबंधी समस्याएं न हों। दूध पिलाने में प्रयुक्त सभी बर्तन पूर्णतः स्वच्छ एवं सूखे होने चाहिए, क्योंकि गंदे बर्तनों से संक्रमण एवं दस्त जैसी समस्याओं की संभावना बढ़ जाती है। बछड़ों को हर समय स्वच्छ एवं ताजा पानी उपलब्ध कराना भी अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि पर्याप्त जल सेवन पाचन, वृद्धि एवं शरीर की सामान्य क्रियाओं के लिए जरूरी होता है।

यदि किसी कारणवश मां की मृत्यु हो जाए, तो समान अवस्था में ब्याई गई अन्य गाय या भैंस का खीस नवजात को पिलाना चाहिए। यदि प्राकृतिक खीस उपलब्ध न हो सके, तो कृत्रिम खीस तैयार की जा सकती है। इसके लिए दो अंडों को अच्छी तरह फेंटकर उसमें लगभग 30 मिलीलीटर अरंडी का तेल, खनिज मिश्रण एवं विटामिन मिलाकर दूध के साथ नवजात को पिलाना चाहिए। यह मिश्रण प्रतिदिन ताजा तैयार करना चाहिए तथा कम से कम पांच दिनों तक दिन में तीन बार देना लाभकारी माना जाता है।

काफ स्टार्टर, हरा चारा एवं संतुलित आहार प्रबंधन

लगभग 20 दिन की आयु के बाद बछड़ों को काफ स्टार्टर देना प्रारंभ करना चाहिए। एक अच्छे काफ स्टार्टर में लगभग 20 प्रतिशत पाच्य प्रोटीन एवं 70 प्रतिशत कुल पाच्य तत्व होने चाहिए। इसमें अनाज, प्रोटीन युक्त आहार, खनिज मिश्रण, विटामिन आदि सम्मिलित होते हैं। जन्म के लगभग 30 दिनों के बाद बछड़ों को हरा चारा भी देना चाहिए, जिससे रूमेन का विकास तेजी से होता है तथा पाचन क्षमता में सुधार आता है। बछड़ों के लिए मिश्रित आहार मुख्यतः मक्का, जई, जौ, गेहूं एवं ज्वार जैसे अनाजों से तैयार किया जाता है। इसमें सीमित मात्रा में गुड़ भी मिलाया जा सकता है। आदर्श मिश्रित आहार में लगभग 80 प्रतिशत टीडीएन एवं 22 प्रतिशत कच्चा प्रोटीन होना चाहिए। अच्छी गुणवत्ता वाली सूखी दलहनी घास, पुआल एवं रेशेदार पदार्थ बछड़ों के लिए अत्यंत उपयोगी होते हैं। धूप में सुखाई गई हरी घास विटामिन-ए, डी एवं बी-कॉम्प्लेक्स विटामिन का अच्छा स्रोत होती है। साइलेज को सीमित मात्रा में 6–8 सप्ताह की आयु के बाद देना चाहिए।

दूध छुड़ाने, वृद्धि एवं स्वास्थ्य प्रबंधन

दूध छुड़ाना सघन डेयरी प्रबंधन का महत्वपूर्ण भाग है। इससे दूध की बर्बादी कम होती है तथा प्रत्येक बछड़े को आवश्यकता अनुसार पोषण उपलब्ध कराया जा सकता है। प्रबंधन व्यवस्था के अनुसार जन्म के तुरंत बाद, 3 सप्ताह, 8–12 सप्ताह अथवा 24 सप्ताह की आयु पर दूध छुड़ाया जा सकता है। दूध छुड़ाने के बाद काफ स्टार्टर की मात्रा धीरे-धीरे बढ़ानी चाहिए तथा अच्छी गुणवत्ता का सूखा एवं हरा चारा उपलब्ध कराना चाहिए। बछड़ों की वृद्धि दर का नियमित मूल्यांकन वजन के आधार पर करना चाहिए। जन्म के समय बछड़े का वजन सामान्यतः 20–25 किलोग्राम होना चाहिए। उचित पोषण, नियमित कृमिनाशन एवं वैज्ञानिक प्रबंधन से बछड़ों की वृद्धि दर 10–15 किलोग्राम प्रतिमाह तक हो सकती है। गर्भावस्था के अंतिम 2–3 महीनों में गर्भित पशु को संतुलित एवं पौष्टिक आहार देना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि इसका सीधा प्रभाव नवजात बछड़े के स्वास्थ्य पर पड़ता है। नवजात बछड़ों को रोगों से सुरक्षित रखना उनकी प्रारंभिक वृद्धि एवं विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। नियमित निरीक्षण, संतुलित पोषण, स्वच्छ वातावरण तथा समय पर टीकाकरण एवं कृमिनाशन से रोगों की संभावना काफी हद तक कम की जा सकती है। बीमारी का उपचार करने की अपेक्षा रोगों की रोकथाम अधिक प्रभावी एवं कम खर्चीली होती है।

बछड़ों के आवास एवं पर्यावरणीय प्रबंधन का महत्व

बछड़ों को दूध छुड़ाने तक अलग एवं स्वच्छ बाड़े में रखना चाहिए, जिससे रोगों का प्रसार कम हो सके। बाड़ा सूखा, हवादार एवं साफ-सुथरा होना चाहिए। उचित वेंटिलेशन से ताजी हवा का प्रवाह बना रहता है तथा धूल एवं नमी से बचाव होता है। बिछावन हेतु लकड़ी का बुरादा अथवा सूखा पुआल उपयोगी होता है। बाहरी बाड़ों को आंशिक रूप से ढका होना चाहिए, ताकि बछड़े तेज धूप, वर्षा एवं ठंडी हवाओं से सुरक्षित रह सकें। उचित आवास एवं स्वच्छ वातावरण बछड़ों की बेहतर वृद्धि, स्वास्थ्य एवं उत्पादक क्षमता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

निष्कर्ष

नवजात एवं छोटे बछड़ों की उचित देखभाल एवं वैज्ञानिक प्रबंधन स्वस्थ एवं अधिक उत्पादन क्षमता वाले पशुधन के निर्माण के लिए अत्यंत आवश्यक है। समय पर खीस पिलाना, स्वच्छ आवास, संतुलित आहार तथा नियमित स्वास्थ्य देखभाल अपनाने से बछड़ों की वृद्धि बेहतर होती है और रोगों से बचाव संभव होता है। सही प्रबंधन से मृत्यु दर कम होती है तथा भविष्य में अच्छे दुग्ध एवं प्रजनन क्षमता वाले पशु प्राप्त होते हैं, जिससे पशुपालकों की आय में वृद्धि होती है। अतः बछड़ों का वैज्ञानिक पालन-पोषण डेयरी व्यवसाय की सफलता और पशुपालकों की आर्थिक उन्नति का महत्वपूर्ण आधार है।